A–968

Total Pages : 4 **Roll No. .....**

MASL–202

M.A. Sanskrit (MASL)

(गद्य एवं पद्य काव्य)

2nd Year Examination, 2024 (June)

Time : 2:00 Hrs. Max. Marks : 70

नोट :– यह प्रश्न-पत्र सत्तर (70) अंकों का है, जो दो (02) खण्डों 'क' तथा 'ख' में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है। ***परीक्षार्थी अपने प्रश्नों के उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त (बी) उत्तर-पुस्तिका जारी नहीं की जायेगी।***

खण्ड–क

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न) (2×19=38)

नोट :– खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **दो** (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. निम्नलिखित श्लोकों में से किन्हीं **दो** की ससन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए–

(क) जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानां
जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं कामरूपं मघोनः।
तेनार्थित्थं त्वयि विधिवशाद् दूरबन्धुर्गतोऽहं
याच्चा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा॥

(ख) पत्रश्यामा दिनकरहयस्पर्धिनो यत्र वाहाः
शैलोदग्रास्त्वमिव करिणो दृष्टिमन्तः प्रभेदात्।
योधाग्रण्यः प्रतिदशमुखं संयुगे तस्थिवांसः
प्रत्यादिष्टाभरणरूचयष्चन्द्रहांसव्रणाङ् कैः॥

(ग) कश्चित्कान्ताविरहगुरूणा स्वाधिकारात्प्रमन्तः
शापेनास्तंङ्मितमहिमा बर्षभोग्येण भर्तुः।
यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु
स्निग्धच्छायातरूषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु॥

(घ) त्वामासारप्रशमितवानोपप्लवं साधु मूहर्ना
वक्ष्यत्यदृध्वश्रमपरिगतं सानमानाभ्रकृटः।
न क्षुदो पि प्रथम सुकृतापेक्षया संभप्राया
प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः कि पुनर्यस्तथोच्चै॥

2. निम्नांकित गद्यांश में से किसी **एक** की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए–

(क) बटुरसौ आकृत्या सुन्दरः वर्णेन गौरः, जटाभिर्ब्रह्मचारी। वयसा षोडशवर्षदेशीय कम्बुकण्ठः, आयतललाटः, सुबाहुर्विशाललोचनश्चाऽऽसीत्

(ख) तस्मिन् पर्वते आसीदेको महान्कन्दरः। तस्मिन्नेव महामुनिरेकः समाधौ तिष्ठति स्म। कदा स समाधिमङ्गीकृतवानिति कोऽपि न वेत्ति। ग्रामणी–ग्रामीण–ग्रामाः समागत्य मध्ये मध्ये तं पूजयन्ति प्रणमन्ति स्तुवन्ति च। तं केचित् कपिल इति, अपरे लोमश इति इतरे जैगीषव्य इति, अन्ये च मार्कण्डेय इति, विश्वसन्ति स्म। स एवायमधुना शिखरादवतरन् ब्रह्मचारिबटुभ्यामदर्शि।

(ग) ''शनैः शनैः पारस्परिक–विरोध–विशिथिलीकृत–स्नेहबन्धनेषु राजसु, भामिनी–भ्रूभंग–भूरिभाव–प्रभाव–पराभूतवैभवेषु भटेषु, स्वार्थचिन्तासन्तान वितानैकतानेषु अमात्यवर्गेषु प्रशंसामात्रप्रियेषु प्रभुषु''। ''इन्द्रस्त्वं कुवेरस्तवं वरूणस्त्वमिति वर्णनमात्रसक्तेषुः।

3. मेघदूत में 'यक्ष की शापावधि' का वर्णन कीजिए।

4. शिवराजविजय' के प्रथम निश्वास के आधार पर तात्कालिक सामाजिक व्यवस्था पर प्रकाश डालिए।

5. मेघदूत पर अपने शब्दों में निबन्ध लिखिए।

खण्ड–ख

(लघु उत्तरीय प्रश्न) 4×8=32

नोट :– खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **चार** (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. दण्डी के विषय में परिचय दीजिए।
2. गद्य काव्य के भेदों का वर्णन करते हुए शिवराजविजय का महत्व बताइए।
3. शिवाजी ने अफजल खान को कैसे मारा इसके विषय में परिचय दीजिए।
4. 'विष्णोर्माया भगवती यया सम्मोहितं जगत्' इस पद्य का सन्दर्भ सहित अनुवाद कीजिए।
5. पं. अम्बिकादत्त व्यास की गद्य शैली पर प्रकाश डालिए।
6. गीतिकावय की दृष्टि से मेघदूत की समीक्षा कीजिए।
7. न क्षुद्रो पि प्रथमसुकृतापेक्षया संश्रयाय। प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः कि पुनर्यस्तथोच्चैः॥ सूक्ति की व्याख्या कीजिए।
8. ''हिंस्रः स्वपापेन विहिंसितः खलः साधुः समत्वेन भयाद् विमुच्यते'' इस पद्य का सन्दर्भ सहित अनुवाद कीजिए।

****